कुण्डली शतक
_४

कालाधन-१

डॉ. उम्मेदसिंह बैद 'साधक'

Published by
Shuktika Prakashan
New Alipur, Kolkata 700063

Kaladhan-1

Written by Dr. Ummedsingh Baid 'Sadhak'
ISBN : 978-93-84435-21-9
Published by : **Sustika Prakashn**
Unit 8, 5th floor, Phase-1
New alipur market complex,
Kolkata 700063
1st Edition , 2016
©All rights reserved to Authour
Printed By: Mishka infotech pvt. Limited
Unit 8 5th floor, Phase 1
New alipur market complex
Kolkata 700053
Price: Rs 40/-
Cover : Pathik Sahoo

कालाधन-१

डॉ. उम्मेदसिंह बैद 'साधक'
प्रकाशक : शुक्तिका प्रकाशन
यूनिट ८, ५ फ्लोर, फेज – १
कोलकाता – ७०००६३
मुद्रक : मिसका इन्फोटेक प्रा. लिमिटेड
यूनिट ८, ५ फ्लोर, फेज १
न्यू आलीपुर मार्केट कॉम्प्लेक्स
कोलकाता- ७०००५३
मूल्य : रू ४०/-

स्वकथ्य

अर्थ-क्रान्ति अभियान अभी चल ही रहा है; आधे रास्ते इस विषय पर ग्रन्थ रूप में यह पहला प्रस्ताव है, कि इस पर सुधि-जनअॅ का संवाद बन सके। फ़ेस-बुक पर आठ नवम्बर से लगातार इन कुण्डलियअॅ पर प्रतिक्रियायें मिल रही हैं, उन सब मित्रअॅ का इस रचना में बहु-आयामी सहभाग स्वीकारता है साधक। अनेक अन्य स्थलअॅ पर अभियान-विरोधी स्वर सुने-समझे। जी टीवी के साथ आजतक , एबीपी आदि चैनल्स पर चलती गर्मागर्म बहसें सुनी-समझी। संसद में चलता हंगामा भी

कारण-प्रयोजन सहित समझने का प्रयास किया। विमुद्री-करण के दूरगामी परिणाम देश-समाज के हित में हैं, तो पुराने कटु अनुभव इसके दुष्परिणामअॅ की चिन्ता भी देते हैं।
काले धन की परिभाषा पर ही कई प्रश्न खड़े हो जाते हैं। सरकारी दमन से घर-घर का सुकून सोख कर बैंको तक खींच लिया गया, अब बेईमान सरकारी अफ़सर-कर्मी, घाघ राजनेता, चालाक कोरपोरेट और शातिर हैकरअॅ के लिए इस डाका डालना क्या मुश्किल काम है? देश-भक्ति का यह ज्वार तो चार दिनअॅ का है, फ़िर तो देश अपनी स्वाभाविक आदत पर आएगा, जिसे भ्रष्टाचार का चस्का लगा हुआ है। धन-प्राप्ति के लिए जिस देश में

नवजात शिशुओं तक को चुराने वाले लोग और समूह मौजूद हअॅ, वहाँ फ़िर से धन अपराध में नहीं ढलेगा, यह आशा आकाश-कुसुम लगती है। मोदीजी के पक्ष में बहुत कुछ है, पर आम भारतीय मन की सुविधा-वृत्ति, सामाजिक दिखावा, कथनी-करनी भेद, स्वयं को ठगने का सुख आदि का क्या इलाज है? काले धन वालअॅ पर दण्ड-स्वरूप 200% से उतरकर 50% पर आ गए, नोट बदल पर दस बार निर्णय बदले गए; यह बात उनकी नमनीयता की बजाय अनिश्चयता में जाती है।

अर्थ-क्रान्ति के अन्य महत्वपूर्ण आयाम आगामी दूसरे शतक में देने का मन है

—कृतज्ञ साधक

प्रकाशकीय

इस वर्ष इस लेखक-कवि की दशाधिक पुस्तकें प्रकाशित करने का सौभाग्य पाया है, हम कृतज्ञ हैं।

प्रस्तुत काव्य संग्रह 'काला-धन' वर्तमान देश-काल परिस्थिति में उभरी आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक निर्णयअॅ से प्रभावित जन-गण-मन की संवेदनाओं का स्वर है। कवि समाज के बीच ही जीता है, फलतः उसके मन-मस्तिष्क का कोई भी कोना सामाजिक उथल पुथल से अप्रभावित एवं तटस्थ नहीं हो सकता। कवि का स्वर समाज के मन को अपनी लेखनी के माध्यम से उद्घाटित करता है। डॉ उम्मेदसिंह बैद 'साधक' द्वारा रचित काव्य-ग्रन्थ वर्तमान सन्दर्भ में उभरी सामाजिक, आर्थिक क्रांति के परिणाम, प्रभाव

एवं परिवर्तन की संभवनाओं की तरफ हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं छोटी छोटी पंक्तियअॅ के माध्यम से कुण्डली छन्द में रचित ये रचनायें पाठकअॅ राष्ट्र, समाज, राजनैतिक दल, पड़ोसी राष्ट्र, सरकार एवं आमजन से सम्बन्धित बिभिन्न पहलुओं से हमारा सामना करा रही है।

'कालेधन' के खिलाफ़ वर्तमान सरकार के प्रधानमंत्री के क्रांतिकारी निर्णय से निश्चित रूप से एक भूचाल सा आ गया है। डॉ उम्मेदसिंह बैद अपनी इस रचना में उन सभी सम्भावनाओं की तरफ पाठकअॅ का ध्यान आकर्षित करने का यथा सम्भव प्रयास किया है, यो वर्तमान में घटित हो रही है एवं भविष्य

में घटने की सम्भावना को समाहित किये हुये है।

इस रचना में समय एवं परिवेश निरंतर मुखर हुआ है। ग्रन्थ की भाषा पाठक से संवाद बनाती उसे आश्वस्त करने के साथ-साथ सहज सचेत भी करती चल रही है। जटिलतम परिस्थितियॅ पर भी बेबाक अपनी कलम चलाने वाले डॉ. बैद कठोरता पूर्वक वर्णित कर ही जाते हैं भले ही निसृत रचना अनेक पाठकॅ, विद्वानॅ एवं विचारकॅ को असमंजस में डालते हुये उन्हें अक्सर असहमत/अप्रसन्न तक कर देती हैं। वैसे भी किसीने लिखा है की 'जिस संगतराश का दिल पत्थर पर छेनी चलाते टूटता हो वह भला क्या सुन्दर मूर्ति निकालेगा।'

डॉ बैद ने इस काव्य रचना में कालेधन के साथ-साथ भारतीय संस्कृति, ईमानदारी, आतंक, भ्रष्टाचार, राष्ट्रवाद, जन-गण-मन, भ्रष्टतन्त्र , अमेरिका का चुनाव, मंहगाई, आजादी एंव बापू सहित अन्य कई विषयअॅ पर पंक्तियां छन्दबद्ध की हैं।

मुद्रा-बदल यात्रारम्भ के एक माह के भीतर ही इस ग्रन्थ का प्रकाशन कवि की मानसिक-बौद्धिक त्वरा और समर्पण का प्रमाण है, प्रकाशक संस्थान का सौभाग्य है कि देश-समाज की स्वीकृतियअॅ में अपना स्वर मिला पा रहा है। पाठकअॅ, विद्वानअॅ और सन्दर्भित संस्थाओं की सम्यक आलोचना-समीक्षा का स्वागत है।

—प्रकाशक

प्रथम प्रकरण
भारतवर्ष महान
पुनः त्याग दोहराएगा, भारतवर्ष महान।
कंधे से कंधा मिला, है मोदी के साथ्।
है मोदी के साथ, करेंसी कागज केवल।
ईमानदारी की कीमत, मानव है केवल।
साधक का सौभाग्य, देह रहते पाएगा।
भारतवर्ष महान त्याग फ़िर दोहराएगा।१

नेता घबराए

कालाधन अब बन्द है, भ्रष्टाचार का अन्त।
बेईमानअॅ का हुआ, सांस समूचा बन्द।
स्वांस समूचा बन्द, राजनेता घबराए।
अब चुनाव में वोट खरीदे कैसे जाएं?
साधक आतंकवादी का संकट में जीवन।
बम-बारुद और बन्दूकें लाए कालाधन। २

कैंसर- अपराध
देशभक्ति का काम है, थोड़ा सा है कष्ट।
आम आदमी कर सके, इस कैंसर को नष्ट।

इस कैंसर को नष्ट करो, अमृत पद पाओ।
भारतमाता जय के स्वर जग में गुंजाओ।
साधक लोहा मनवा लो अपनी शक्ति का।
बहुत बड़ा आया है अवसर देश-भक्ति का। ३

स्वीकारी चिकित्सा
सबसे पहले देश है, सबसे ऊपर देश।
पथ-मत-जाति बाद में, चाहे जो हो वेश।
चाहे जो हो वेश, कोई भाषा या बोली।
सबने ही स्वीकारी है मोदी की गोली।

सुन साधक जीने-मरने से भी है
पहले।
देश बचे तो हाजिर जान है सबसे
पहले। ४

लगा रामबाण
सर्जिकल ही हो गया, स्लीपर-सेल्स
का आज।
भीतर-बाहर शत्रु सब, भ ंचक्के हैं
आज।
भ ंचक्के हैं आज, जान बचना भी
मुश्किल।
राम-बाण ही लगा, कहाँ पाएंगे अब
हल?
साधक नया सूर्य देखेगा अब तो कल
ही।

देश-द्रोहियअॅ का हो गया है
सर्जिकल ही। ५

सज्जन का उत्सव
सज्जन सारे खुश हुए, दुर्जन हुए
उदास।
दिवस आज का बन गया इतिहासअॅ में
खास।
इतिहासअॅ में खास, चुनाव की धारा
बदले।
सरकारी अमले की हरामी आदत
बदले।
साधक उत्सव मना रहे भारत-जन
सारे।
दुर्जन हुए उदास, खुश हुए सज्जन
सारे। ६

भ्रष्ट तन्त्र
भ्रष्ट-तन्त्र को नाथना, असंभव सा काम।
मोदी ने चंका दिया, कर दिया काम तमाम।
हो गया काम तमाम, देशद्रोही गुर्गों का।
घर-घर में चटकारा होगा इन मुर्गों का।
साधक एक तीर में साध लिया है सबको।
नाथ दिया मोदी ने पूरे भ्रष्ट-तन्त्र को।७

दाऊद जी कंगाल
बैठे-बैठे हो गए दाऊद जी कंगाल।

तस्कर, जुआ, दारू का बुरा हो गया हाल।
बुरा हुआ है हाल, दुष्ट-दुर्जन-द्रोही का।
उत्सव सा हो गया, आज सज्जन-सोही का।
साधक को आनन्द मिल गया बैठे-बैठे।
दाऊद भी कंगाल हो गए बैठे-बैठे॥ ८

जागो भारत जागो
नया सवेरा हो गया,चमके भारत सूर्य।
काली रातें बीतती, काले धन से पूर्व
काले धन से पूर्व, सदा सेनानी उसके।
दबोचते सज्ज्न की सांसे गहरी कस के।

'साधक मोदी' सा मन तेरा-मेरा हो गया।
जागो भारत जागो, नया सवेरा हो गया। ९

व्यसन-बन्दी
रद्दी कागज बन गए, अब हजार के नोट।
काले धन्धे अब कहाँ, ना बिकते अब वोट।
ना बिकते अब वोट, नाच नंगा ना होगा।
जहर मिला 'पाऊच' गरीब की जान न लेगा।
जिसके बल गुण्डे-अपराधी, राजन बन गए।
साधक अब वे नोट तो रद्दी कागज बन गए। १०

द्वितीय प्रकरण

मानवीय मूल्य

कोरा कागज कैसे सबसे बडा बन गया?
माता-पिता-गुरु से ऊँचा रुपया बन गया।
रुपया बन गया बाप, सभी के सिर चढ बोले।
मानव-मूल्यअॅ का सिंहासन डगमग डोले।
साधक यह औकात में अपनी आए कैसे?
सबसे बडा बन गया कोरा कागज कैसे?१

अपराधी तन्त्र
नारी बिकती, शिशु बिके, दानवता का दौर।
काले धन के सामने, बौने हैं सब और।
बौने हो गए और, झुक गया सिर मानव का।
ईश्वर की रचना में स्थान श्रेष्ठ मानव का।
साधक पैसे से ईश्वर की सत्ता बिकती।
दानवता घनघोर, देश में नारी बिकती। २

भोगे सब संसार
पैसे के बल पर हुआ ऐसा अत्याचार।

कर्राहते धरती-गगन, भोगे सब संसार।
भोगे सब संसार, जीव और वनस्पति तक।
भ्रष्ट हैं पांचअॅ तत्व, धरा से दूर गगन तक।
साधक सीधी बात बोलता, सत के बल पर।
अत्याचार किया कितना पैसे के बल पर। ३

सृष्टि-नियम
नियम सृष्टि का जान लो, करे जो दुरुपयोग।
वह वंचित हो जाएगा, स्वयं कर्म-फल भोग।

स्वयं कर्म-फल भोग, जानता
बच्चा-बच्चा।
माने केवल वही रहा जो मन से
सच्चा।
साधक धन से वंचित हो गया वही मान
लो।
काला धन ना चले, सृष्टि का नियम
जान लो। ४

पुनर्वापसी
उल्टी बनकर आ रहा, काले धन का
ज्वार।
रात-रात भर गिन रहे नोटॲ
के अम्बार।
नोटॲ के अम्बार बन गए बडी
मुसीबत।

पैसे वालअॅ की हो रही है दुर्लभ
हालत।
साधक कौन चाहता जीना गिल्टी
बनकर।
बाहर आता है काला धन उल्टी
बनकर।५

भय-प्रलोभन
जन-गण-मन पर चढ गया, पैसे का
भय देख।
आतंकित सज्जन सभी, छत पर
चढकर देख।
छत पर चढ कर देख, कहानी घर-घर
की है।
बुजुर्ग-बच्चे-नारी, पीडा हर नर की
है।

नगद कह रहा साधक, ना जीता उधार पर।
पैसे का आतंक चढ गया जन-गण-मन पर। ६

मुद्रा-दुरुपयोग
साधन है तन की तरह, धन मानव हित यार।
साध्य अगर बन जाए तो, बिसरा देता प्यार।
बिसरा देता प्यार, जो है जीवन की मंजिल।
पैसे के बल पर होता न कुछ भी हासिल।
साधक साध्य की खातिर, कमतर हैं सब साधन।

धन मानव हित यार, है तन से छोटा साधन।७

देश हित है कसौटी
वोट गिन रहे अमरीकी, हिन्दू गिनते नोट।
वोट-नोट सम्बन्ध में, तय हो सच या खोट।
तय हो सच या खोट, देश हित बने कसौटी।
जीवन-मूल्यअॅ के समुख कमतर है रोटी।
साधक कब से अपना सच या खोट गिन रहे।
हिन्दू गिनते नोट, अमरीकी वोट गिन रहे। ८

मोदी-चोट
काला धन ही पा सके, सारे काले
वोट।
वोट-नोट गठजोड पर यह मोदी की
चोट।
है मोदी की चोट, मगर रोने तक न
दे।
दुष्ट राजनेता को कोई अवसर न दे।
साधक खिसक गई ईंटे, ज्यअॅ नीवअॅ
से ही।
काला वोटर ना पाए अब काला धन
ही। ९

धन का शुद्धिकरण
काले धन के बल चले, काले धन्धे
मित्र।

काले धन्धेबाज हैं, देश का काला चित्र।
देश का काला चित्र, साफ हो जाए जल्दी।
पैसा बनकर शुद्ध, जगह निज पाए जल्दी।
भारत साधक प्रबल समर्थक सच्चे धन के।
काले धन्धेबाज मित्र हैं काले धन के।
१०

तृतीय प्रकरण

न्याय की विजय

राजहंस साबित हुआ, यह मोदी का मन्त्र।

दूध और पानी अलग हैं, साफ हुआ है चित्र।
साफ हुआ है चित्र, कौन किस पक्ष खडा है।
आम आदमी सदा सत्य के साथ खडा है।
साधक न्याय-सत्य जीते, फिर साबित हो गया।
यह मोदी का मन्त्र, हंस ही साबित हो गया।१

सीधा हल
सज्जन सारे खुश हुए, दुर्जन हैं बेजार।
सपने में सोचा नहीं, ऐसी है सरकार।
ऐसी है सरकार, देश-हित देखे केवल।

सत्तर वर्षों तक ना देखा यह सीधा हल।
साधक दुर्जन पडफ रहे मोदी के मारे।
मोदी की मजबूती से सज्जन खुश सारे।२

ट्रम्प-कार्ड
ट्रम्प-कार्ड "मोदी" चला, अमरीका तक देख।
सारी धरती हो रही, अब मोदीमय देख।
अब मोदी_मय देख, ये भारत की शक्ति है।
मोदी के मन में बसती भारत-भक्ति है।

साधक मोदी जी का फैसला बहुत हार्ड
है।
चलता अमरीका तक मोदी ट्रम्प कार्ड
है। ३

मंगल भाव
अमरीकी चुनाव के अचिन्तित
परिणाम।
कठोरता के पक्ष में वोट पडा है आम।
वोट पडा है आम, यही यूपी में होना।
धरा ही रह जाएगा माया-मुलायम
रोना।
साधक शुभ दर्शन परिणाम हैं मंगल
भाव के।
साबित करते दृश्य अमरीकी चुनाव
के। ४

विश्व-शान्ति

भारत से अमरीका तक, चलते शुभ
के भाव।
वसुधा इक परिवार है, आदिकाल से
चाव।
आदिकाल से चाह, ऋषि भारत के मन
की।
मोदी युग में राहें बनती विश्व अमन
की।
साधक चाहे बाहर हो धरती गारत
से।
चलते शुभ के भाव अमरीका तक
भारत से।५

ट्रम्प-विजय

ट्रम्प-कार्ड ऐसा चला, जीत गए हैं ट्रम्प।
इधर ले रहे मोदीजी, बडी आर्थिक जम्प।
बडी आर्थिक जम्प, ये दुनियां साक्षी बनती।
सारी दुनियां में नीति मोदी की चलती।
साधक अब रस्ता भारत का कहां हार्ड है?
अमरीका में जीत दिखाए ट्रम्प-कार्ड है।६

वसुधा कुटुम्ब
अमरीका से हिन्द तक, लहर चल रही तेज।

सारी धरती एक है, नहीं कोई
परहेज।
नहीं कोई परहेज, सभी के सुख-दुख
साझे।
मोदी के उद्‌गार सभी करते अब
साझे।
साधक की चाहत पहुँची है आज जहाँ
तक।
लहर वही है तेज हिन्द से अमरीका
तक।७

पापी-पैसा
पैसा जब तक बाप है, मानव का है
पाप।
ऊँचाई के सूत्र सब, करें राम का
जाप।

करें राम का जाप, उभर कर कैसे
आएं।
दबा रहा है काला धन, हम सब
शरमाएं।
साधक ज्यादा ही पाता, क्षमता से अब
तक।
मानव का अभिशाप पैसा बाप है जब
तक। ८

पैसे की औकात
पैसे को औकात में, लाया मोदी आज।
मानव ही है श्रेष्ठतम, साबित हुआ है
आज।
साबित हुआ है आज, कि हर संस्था से
ऊँचा।
कद मानव का हरदम ही है सबसे
ऊँचा।

दोहराता है साधक सूत्र ये बात-बात में।
लाया मोदी आज, पैसे को औकात में।
९

योजकत्व
संस्थाएं सब मान लें, व्यक्ति होता ज्येष्ठ।
मोदी व्यक्ति रूप में पीएम से भी श्रेष्ठ।
पीएम से है श्रेष्ठ, विरोधी तक कहते हैं।
कोटि-कोटि हृदयअॅ को अपने से लगते हैं।
साधक का प्रस्ताव, जानते हैं सो मान लें।
व्यक्ति होता ज्येष्ठ संस्थाएं भी मान लें। १०

चतुर्थ प्रकरण

नो नवम्बर
बडा धमाका हो गया नाइन-इलेविन एक।
अमरीका और भारत में फर्क बडा है एक।
फर्क बडा है एक, वहाँ कायर था हीरो।
भारत सूचित करे, शत्रु को करदे जीरो।
साधक माने अर्थ-तन्त्र पर बडा धमाका।
नौ नवम्बर को हुआ है बडा धमाका।१

शुभ-परिणाम
नकारात्मक काम का, उल्टा हो परिणाम।
स्वीकारात्मक भाव का शुभ होता परिणाम।
शुभ होता परिणाम, शुरु में कष्ट भले हो।
शुभ करते मोदी कहते जो साथ चले हअॅ।
मस्ती में रहता साधक, ले नाम राम का।
उल्टा हो परिणाम, नकारात्मक काम का।२

काला धनावरोध
काले धन से चल रहे, नकारात्मक काम।

सीमा पर खतरा बढा, देश हुआ
बदनाम।
देश हुआ बदनाम, भ्रष्ट है तन्त्र
समूचा।
दर्द उठ रहा पेट में करते माथा
ऊँचा।
साधक जीता है विचार, तन-मन और
धन से।
नकारात्मक काम करे ना काले धन
से।३

व्यक्ति में विश्वास
व्यक्ति का विश्वास ही, बचा सकेगा
अर्थ।
वरना सारा अर्थ ही, हो जाता है
व्यर्थ।

हो जाता है व्यर्थ, ज्ञान-सम्पदा का
स्वामी।
पिटता आया है भारत तो क्या है
खामी?
साधक लेकर जीता है इतनी सी आस
ही।
बचा सकेगा विश्व, व्यक्ति का विश्वास
ही। ४

ट्रम्प-संदेश
इस्लामी आतंक को ट्रम्प का है
सन्देश।
मोदीजी की मान लो, वरना छूटे देश।
वरना छोडो देश ना निभेगी अब
तुमसे।
कोई प्यार नहीं करता दुनियां में
तुमसे।

याद करो साधक मोदी ने कहा पाक
को।
वही ट्रम्प संदेश, इस्लामी आतंक
को। ५

अतीत और आगत
साथ चलें तो स्वागत है, नहीं तो हम
बढ जाएं।
विरोध भी हो आपका, हमें डरा ना
पाए।
हमें डरा ना पाए, कह रहे ट्रम्प और
मोदी।
दोनऑ ही हैं पक्के आतंकवाद विरोधी।
साधक साथ-साथ ही देखे भूत और
आगत।
चिन्ता कैसी कोई साथ चले तो
स्वागत। ६

बदली सरकार
ध्यान से देखो मित्रवर, बदल रहा संसार।
समीकरण नूतन बने, बदली है सरकार।
बदली है सरकार, काम का ढंग भी बदला।
झटके से बिन बोले अर्थ-तन्त्र झकझोरा।
रुकना साधक थोडा अपने भीतर झांको।
बदल रहा हर दृश्य मित्रवर ध्यान से देखो। ७

आघात

इतने विशाल तन्त्र में, गोपनीयता रिस्क।
कानो-कान खबर ना थी, ली मोदी ने रिस्क।
ली मोदी ने रिस्क देश वाहवाही करता।
जाने चन्द जनअँ के पेट में क्या कुछ दुखता?
साधक ढूंढ रहा खुद को मोदी-मन्त्र में।
गोपनीय रखकर जीता है अर्थ-तन्त्र को। ८

कानूनी कोना
चोट हवाला पर हुई, महंगाई पर रोक।

आतंकवाद पे चोट की। काले धन को रोक।
काले धन पर रोक, लगाम है भ्रष्टाचार पे।
पाक से नकली नोट आएं कानूनी थॉट से।
साधक देखे षड्यन्त्रअॅ का हवा निकाला।।
महंगाई पर रोक हुआ विच्छिन्न हवाला। ९

चक्रव्यूह भंजन
अर्जुन जैसे तोडता, मोदी हर षड्यन्त्र।
साठ साल से उलझते ग्रन्थ बन गए तन्त्र।

ग्रन्थ बन गए तन्त्र, शोध में लगे अनेकॲ।
विशेषज्ञ बन गए देश में लोग अनेकॲ।
साधक व्यर्थ की बातॲ में मोदी न उलझता।
तोडे चक्रव्यूह को जैसे पार्थ तोडता। १०

पंचम प्रकरण

सिंह-गर्जना

मोदी-मोदी गूंजता धरा-गगन थर्राय।
दुश्मन सारे डर रहे, तितर-बितर हो जाए।
तितर-बितर हो जाए, बिना मारे ही मरते।

सिंह-गर्जना सुनकर जैसे सियार
डरते।
साधक का मन-माथा भरमाया सा
डोलता।
धरा-गगन थर्राय मोदी-मोदी गूंजता।१

त्रिविध सच्चा
बच्चा बच्चा बन रहा, मोदी का
पर्याय।
देशप्रेम का भाव ले, सारा जग
गुंजाय।
सारा जग गुंजाय, नाम भारत का
ऊँचा।
स्वयं आचरणपूर्वक सिखलाए मन
सच्चा।
साधक अपने श्राद्ध काल में त्रिविध
सच्चा।

मोदी का पर्याय बन रहा बच्चा बच्चा।
२

जय-जयकार
चमत्कार पर चमत्कार मोदी करता
जाए।
भ ंचक्के विरोधी सब, कहाँ ठिकाना
पाय।
कहाँ ठिकाना पाय, कोई कोना न
छोडा।
जन-गण-मन को देश प्रेम हित
सार्थक मोडा।
सुन साधक चढते सूरज की
जय-जयकार है।
मोदी करता जाए निरन्तर चमत्कार
है। ३

विडम्बना पाक
चिर नफरत भारत से है, एकमात्र आधार।
कैसे रास आए भला, पाकिस्तान को प्यार।
पाकिस्तान को प्यार से सत्तर साल संभाला।
भारत के बच्चे बच्चे का देखा भाला।
दुनियां से साधक का दोस्ताना है फितरत।
पाकिस्तान का एक आधार, भारत से नफरत। ४

एक जन
जनता दोनअॅ एक सी, नेताओं में भेद।

नेहरु-जिन्ना ने दिया, कोटि जनअॅ का
खेद।
कोटि जनअॅ का खेद, साठ-सत्तर
सालअॅ का।
पाक का है इतिहास बडे
गडबडझालअॅ का।
साधक जाने आशा-आकांक्षाएं ऐसी।
नेता दुश्मन, जनता की पहचान इक
जैसी।५

अन्तर्यात्रा
जिन्ना के मन में भरा, गाँधी-नेहरु
द्वैष।
लाख-करोडअॅ कट गए, तब जन्मा
यह देश।
तब जन्मा यह देश, तो हिंसक क्यअॅ
न होगा?

बिन कारण ही मारा-मारी क्यअॅ न करेगा?
सारे जहाँ का प्यार भरा, साधक के मन में।
द्वैष हिन्द के प्रति नवाज-जिन्ना के मन में। ६

अद्भुत गाथा
भीतर पहले जीत लो, तो आसां हो जाए।
बाहर के मैदान में विजय सहज हो जाए।
विजय सहज हो जाए, कहे मोदी का माथा।
देश के भीतर ही सर्जिकल, अद्भुत गाथा।

सुन साधक अपने को जीत कर मन
का मीत लो।
बाहर सब आसान, भीतर प्रथम जीत
लो।७

सतत-साधना
भारत को ही जी रहा, अहर्निश
अविराम।
देश-विदेश सभी मोर्चे, लडता बिन
विश्राम।
लडता बिन विश्राम, शिकायत नही
सब से।
कहता सो कर के दिखलाता, पूछो
किसी से।
साधक यही साधना जाने कब से
करता।

अहर्निश अविराम भारत को ही
जीता। ८

सहन-शक्ति
सीमा के संघर्ष में, यह मोदी का दांव।
घर में पहले कर दिया, सर्जिकल का
घाव।
सर्जिकल का घाव, स्वयं को स्वयं
दिया है।
भारत- सहनशक्ति को पहले जांच
लिया है।
साधक निज शक्ति निर्णायक हर
विमर्ष में।
यह मोदी का दांव सीमा के संघर्ष
में। ९

मोदी-संदेश
जीने का ढंग बदल लो, सर्जिकल संदेश।
काले धन्धे बन्द हअॅ, सुखी रहेगा देश।
सुखी रहे यह देश, जो ऐसा ना चाहेगा।
दुश्मन के जैसा ही वो मारा जाएगा।
साधक सीधी बात, किसी भी कान से सुन लो।
मोदी का संदेश, जीने का ढंग बदल लो।१०

षष्टम प्रकरण

अभेद-दर्शन
भेद नहीं रखा कोई, हिन्दू-मुसलमान।

खाट खड़ी उसकी हुई, जो है
बेईमान।
जो है बेईमान, उसीके पेट दर्द है।
वर्षों से एकत्र हो रहा यही मर्ज है।
साधक आयुर्वेद दवा आसान न कोई।
रोग निकाला, भेद नहीं रखा है कोई।
१

सद्गति
शुभ गति मंजिल दे सके, संभावना है
मित्र।
धीरज रखो देश का संवर रहा है
चित्र।
संवर रहा है चित्र, बने
नागरिक-संहिता।
मुद्रा शुद्धि के पीछे शुभ भाव की
शुचिता।।

साधक सही आचरणपूर्वक पाओ
सद्गति।
निकट दीखती मंजिल, मित्रअॅ रखना
शुभ गति। २

आत्म-सम्मान
स्व-पहचान की यात्रा, भारत रखा
नाम।
'स्व' से दूर हुआ जितना, उतना ही
बदनाम।
उतना ही बदनाम, भ्रष्ट आचरण बन
गया।
देश चुनावी नेता का रण-क्षेत्र सज
गया।
सर्जिकल बन गया है साधक आन मान
की।

भारत का सम्मान यात्रा स्व-पहचान की। ३

तपोबल
अन्तर-तप के बल मिला, विश्व-गुरु सम्मान।
तप का अवसर आ गया, पुण्यअॅ का परिणाम।
पुण्यअॅ का परिणाम, है यह मुद्रा-सर्जिकल।
दोष-निवारण हो जाए तो मिले स्वस्थ हल।
कष्ट सहेगा साधक, अपने जागृति बल पर।
विश्व-गुरु सम्मान है अपने तप संबल पर। ४

नेस्त्राडेमस की भविष्य वाणी
नेष्त्राडेमस के वचन, होते अब
चरितार्थ।
लिखा खुले आकाश में, साफ़ हो रहे
अर्थ।
साफ़ हो रहे अर्थ, मोदी के चरित्र में।
छवि भारत की चमक रही है शुभ
चरित्र में।
सामने दिखते हैं शुभ दिन अब इस
साधक के।
होते हैं चरितार्थ वचन नेस्त्राडेमस
के।५

सत्ता का केन्द्रीकरण
सत्ता का केन्द्रीकरण, जन-गण-मन
का त्रास।

पैसा-सत्ता एक संग, जहर बन गया
खास।
जहर बन गया खास, जांच लो
परिजनॲ में।
संवेदना ताक पर होती धनी जनॲ
में।
साधक संस्था दानव का सीधा
समीकरण।
जन-गण-मन का त्रास,
सत्ता-केन्द्रीकरण। ६

भविष्य की चिन्ता
मोदी तक तो ठीक, मगर क्या होगा
बाद में।
निकल आए कोई रावण, सता की
आड में।

सत्ता-आड में न्याय-सत्य और धर्म
डूबता।
अहँकार-अन्यायअॅ का अम्बार
उभरता।
साधक ने जाना है बस इतना अब
तक तो।
बाद में क्या हो, भले ठीक है मोदी तक
तो।७

स्व-तन्त्रता
स्वतंत्रता व्यक्ति की सत्ताधीन हो
जाए।
जागृति-क्रम की राहें पराधीन हो
जाए।
पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं, जाने
जन-जन।

सत्ता को श्रद्धा ना करता है भारत जन।
साधक ने महिमा जानी है स्वतन्त्रता की।
सत्ता होती दुश्मन व्यक्ति स्वतन्त्रता की। ८

निजत्व का विस्तार
'स्व' की वरीयता है जन-गण-मन में शाश्वत।
'स्व' का ही विस्तार पहुँचता है सत्ता तक।
'स्व की सत्ता' चाहत चलती आदि काल से।
स्व की फेरी ही करता है मानव अब तक।

साध क स्वयं केन्द्र में है अब,
सम्भले सत्ता।
जन-गण-मन में शाश्वत है स्व की
वरीयता। ९

खुश होता गरीब
पैसे वाले रो रहे, गरीब हँसते जाएं।
अजब तमाशा जगत को, मोदीजी
दिखलाय।
मोदीजी दिखलाय, दिवस में तारे
सबको।
हाय हुआ क्या उल्टी सी करवा दी
सबको।
हँसता साधक मस्ती में, उलझन में
काले।
गरीब हँसते जाएं, रो रहे पैसे
वाले। १०

सप्तम प्रकरण

जय जन-गण-मन

जन-गण-मन में छा गया, छक्का मारा खूब।
नेता सब बौरा गए, चिन्ता-सागर डूब।
चिन्ता-सागर डूब, करैंसी कहाँ-कहाँ है।
जहाँ खोजने जाएं, वहीं कोई देख रहा है।
साधक आम-जनअॅ से पहली बार डरा है।
छक्का मारा जन-गण-मन में अब निखरा है।१

खुली पोल

छिपा के रखा जतन से, सारा बाहर आए।
शोर मचा दुर्गन्ध का, उल्टी सा गन्धाय।
उल्टी सा गन्धाय, पांचसौ हजार वाला।
बड़े दिनअॅ से उजला था, अब है मुँह काला।
साधक मोदी ने सबके सम्मुख दर्पण पटका।
चेहरा सामने आया अब तक छिपा के रखा। २

बाँट लिया दुःख
चाय बेचने वाले ने, बांट लिया है दर्द।
दलित जनअॅ की वेदना, समझा दिल से मर्द।

समझा दिल से मर्द, साध उनकी भी पूरी।
दर्द संग सम्पत्ति बांटी, मिट गई है दूरी।
साधक का दिल जीत लिया दाढी वाले ने।
बांटा देश का दर्द देख लो चाय वाले ने। ३

आदरणीय
दाग न हो दामन कोई, वो है अनुकरणीय।
जन-गण-मन अब पा गया, कोई आदरणीय।
कोई आदरणीय बचा सकता श्रद्धाएं।
टूटी थी जन-गण के मन की चिर आस्थाएं।

साधक सत्ताएं चलती कर
आस्था-अर्पण।
वो ही अनुकरणीय साफ़ हो जिसका
दामन। ४

भारत भाव
अस्सी प्रतिशत आम जन, ध्यान से
सुनता बात।
नायक जब-जब बोलता, दिल में उतरे
बात।
दिल में उतरे बात, आचरण उसके
पीछे।
वसुधा के जन मोहित हैं भारत के
पीछे।
साधक 'भारत भाव' में रहता जन्मअॅ
शत-शत।

ध्यान से सुनता बात देश का अस्सी
प्रतिशत। ५

आतंकरोधी - सर्जीकल
छपते पाकिस्तान में, भारत के ये
नोट्।
तस्करी से आ रहे, बिकते इनसे
वोट्।
बिकते इनसे वोट, पार्टियां हारे-जीते।
नीति-नियामक भारत के इनके बल
बनते।
साधक अर्थ-नीति नियन्ता हिन्दुस्तान
में।
नोटॲ के बल नाचे, छपते पाकिस्तान
में। ६

कौन गद्दार
अपराधी-आतंकी या तस्कर
पाकिस्तान।
उसके सारे पाप को ढोए मुसलमान।
ढोए मुसलमान उन्हें गद्दार की गाली।
बार-बार सहनी पड़ती दुखती है
साली।
साधक समझे समीकरण यह बात है
आधी।
तस्कर, बेईमान पाक गुण्डा
अपराधी।७

देश-द्रोह
अन्दर-बाहर हो गया, सर्जीकल
मस्तान।
गुण्डे, तस्कर, अपराधी, नेता,
पाकिस्तान।

देश के नेता, पाकिस्तान एक ही
पाले।
टीवी पर गाली देते पीएम को साले।
बौने मुँह ऊँचा करके थूके सूरज पर।
साधक मोदी का सर्जिकल
अन्दर-बाहर। ८

चौकीदार
खाउँ न खाने दूँ, कहकर आया बन्दा।
सच्चा चौकीदार सही कर पाया
धन्धा।
सही किया धन्धा, सारे इक साथ
ठिकाने।
सच्चा-झूठा साफ़ दिखें दिखते दो
खाने।
कह साधक दुविधा मन में न अब रहने
दूँ।

कर दिखलाए बन्दा 'खाऊँ न खाने दूँ। ९

संजीवनी मन्त्र
अन्तिम सा्सअॅ पर रहा, राजनीति का तन्त्र।
मारुति-मोदी ला सका, शुभ संजीवनी मन्त्र।
शुभ संजीवनी मन्त्र, दशा ही बदल गई है।
अहँकारी पाले में भगदड़ मची हुई है।
साधक अमर संस्कृति चलती विश्वासअॅ पर।
राजनीति का तन्त्र रहा अन्तिम सांसअॅ पर। १०

अष्टम प्रकरण

देश की बयार
बदल रहा है विश्व फ़िर, बदली देश बयार।
जन-गण-मन को देख लो, छाई मस्त बहार।
छाई मस्त बहार, नया यौवन फ़ूटा है।
नर-नारी-बच्चा-बुजुर्ग, सन्नद्ध जुटा है।
साधक कष्ट सहेंगे, जन-जन कह रहा है।
बदल रही है बयार, भारत बदल रहा है।१

वसुधा कुटुम्ब
सारे जग में जा बसे, ले हिन्दू विश्वास्।

अपने शुभ आचरण से, बिखराते हैं सुवास्।
बिखराते हैं सुवास, तभी हिन्दू-मय धरती।
मोदी से स्वीकार हुई है विश्व-भारती।
साधक शीघ्र पसर जाएंगे अपने जग में।
कुटुम्ब है यह धरा, कहेंगे सारे जग में।२

चायवाला राजनेता
जोर से दुखता है मगर, रोना भी दुश्वार।
चोर की मां कैसे कहे, बेटा है मक्कार।
बेटा है मक्कार, मुझे सूली पे टांगा।
खुद भी रोता, उठकर के पानी ना मांगा।

साधक खेल भी उसका है, मैदान भी
उसका।
चाय वाले ने मारा, मुझको जोर से
दुखता। ३

जजबात
माया-ममता-मुल्लायम, काँग्रेस के
साथ।
इक पाले में हो गए, फ़ूट रहे जज्बात।
फ़ूट रहे जजबात, कि जनता देख रही
है।
नानी ही मर गई, आचरण नहीं सही
है।।
सुन साधक अब जाग रही है सारी
जनता।
भागो काँग्रेस मुल्लायम, माया,
ममता। ४

रिरियाते नेता
रिरिया कर नेता कहे, यह है
अत्याचार।
थप्पड़ मारा जोर का, रोने ना दे यार।
रोने ना दे यार, बड़ा ही शातिर
निकला।
नब्ज पकड़ ली जन-गण की, यह
माहिर निकला।
साधक तितर-बितर अपराधी अब
घबरा कर।
यह तो है अन्याय कहे नेता रिरिया
कर। ५

जन-गण-मन का नया उत्सव

नया हुआ उत्सव कोई, जन-गण-मन मुस्काय।
नेता-अपराधी-गुण्डे, ज्यअॅ नानी मर जाय।
ज्यअॅ नानी मर जाए, जहाँ जो छुपे हुए थे।
सारे बाहर आएं, जले जंगल में जैसे।
साधक खुश, सज्जन या दुर्जन साफ़ हुआ है।
जन-गण-मन मुस्काय, ये उत्सव नया हुआ है। ६

विश्वास वापसी
सारे शुभ घट जाएंगे, लौटा है विश्वास्।
देश-कार्य हित सब जुटे, कमर कसी है खास।

कमर कसी ले आस, हर जगह
गांव-गली में।
सारे सज्जन उत्साहित हैं, दुनियां भर
में।
गाता है उत्साहित साधक, दिखता
शुभ है।
पूरा है विश्वास हो रहा सारा शुभ है।
७

भ्रष्टाचार का कैंसर
कैंसर भ्रष्टाचार का, अन्त दिख रहा
साफ़।
अपराधी कचरा हटे, वातावरण हो
साफ़।
वातावरण हो साफ़, ठानता है
जन-गण-मन।

ताल ठअॅक के मैदानअॅ में उतरा
जन-जन।
साधक सत्ता के संग भाव जुड़ा जनता
का।
अन्त दिख रहा साफ़ कैंसर
भ्रष्टाचार का। ८

चरैवेति
आते जाने के लिए, करते कार्य
महान्।
अमर रहे इतिहास में, उनकी शुभ
पहचान।
उनकी शुभ पहचान, सतत सन्देश
सुनाती।
चरैवेति स्वर व्यक्ति-व्यक्ति में नित
दोहराती।

साधक की साधना, चले चिर साध्य
को पाने।
करते कार्य महान जगत में
आने-जाने। ९

उत्तम सफ़ाई वाला
फ़ाड़े कोई जला रहा, कर नोटअॅ के
ढेर।
भारत को गन्दा करे, यह कचरे का
ढेर।
यह कचरे का ढेर, सफ़ा कर डाला
चटपट।
अच्छा स्वीपर है मोदी, निपटाता
झटपट।
साधक है आश्वस्त नहीं घबराए कोई।
चोर जलाता चुपके से, ना पकड़े
कोई। १०

नवम प्रकरण

ठगे गए भगवान
प्रभु को भी ठगते रहे, तेरी क्या औकात।
काले धन्धेबाज की सुनते सारी बात।
सुनते सारी बात, नहीं तो भोग न मिलता।
बन्दी हैं भगवान, दान काला धन मिलता।
साधक धन्यवाद-पात्र है बस मोदी ही।
ध्वस्त हैं धन्धेबाज, ठग रहे थे प्रभु को भी।१

भ्रष्ट तन्त्र और कोर्ट-कानून
आम आदमी चोर है, मेरी है सरकार।

मैं ही कोर्ट-कानून हूँ, जन-गण-मन
लाचार।
जन-गण-मन लाचार, डरे अपराधी
जैसा।
दो-दो खाते हर व्यापार में, बनता
पैसा।
भय-प्रलोभन से साधक, जकड़ा था
आदमी।
महाचोर सरकार से डरता आम
आदमी। २

धृतराष्ट्री व्यवस्था
इंस्पेक्सन और टेक्स का, बहु-पंजी था
खेल।
लोक-मान्यता बन गई, सज्जन के
हित जेल।

सज्जन के हित जेल, है
दुःशासन-दुर्योधन।
न्याय-व्यवस्था धृतराष्ट्र, लटका
जन-गण-मन।
साधक के सौभाग्य से आया युग मोदी
का।
बिखर गया संजाल, इंस्पेक्सन और
टेक्स का। ३

शुभ की आशा
सर्जिकल से जुड़ गया, शुभ आशा का
तार।
धीरे-धीरे सब सही, हो जाएगा यार।
हो जाएगा यार, चमक भारत की
लौटे।
बन्द स्वतः हो जाएंगे, सब धंधे खोटे।
साधक वर्तमान में जीना बेहतर कल
से।

शुभ आशा का तार जुड़ गया
सर्जिकल से।४

संभावनाएं
रिस्क लिया था मोदी ने, जन का कर
विश्वास।
जन-गण-मन नायक बना, उपलब्धि है
खास।
उपलब्धि है खास, निराशा बहुत घनी
थी।
भ्रम सारे हो गए नष्ट, उलझन ये
बडी थी।
साधक ने भी चिन्तन इस पर खूब
किया था।
कर जन का विश्वास, बडा ही रिस्क
लिया था।५

मजबूरी
दो सप्ताह में हो गए, भ्रम के बादल दूर।
मोदी-मोदी गूंजता, दूजा दल मजबूर।
दूजा दल मजबूर, खींस ही निपोरता है।
बौराया अपनअॅ को ही अब खसोटता है।
पचास मांगे, पन्द्रह में संतुष्ट हो गए।
साधक मोदी हीरो दो सप्ताह में हो गए। ६

पुनर्निर्माण
दुख के बादल छंट गए, अब आगे की हेर।

राष्ट्र पुनर्निर्माण की, सुन ले मोदी टेर।
ऊँची मोदी टेर, हृरदय तक पहुँची सबके।
जमा हुआ धन बहे, काम आ जाए जन के।
मुक्त बोझ से साधक सारे, अब दिन सुख के।
चमकी उजली धूप छँट गए बादल दुख के। ७

सरकारी अमला
सरकारी अमले करें, देखो भैया काम।
चाय मिल रही लाइन में, देख मिले आराम।

देख मिला आराम, कहाँ सोचा था भैया?
असरकारी अब सरकारी, मैया री मैया!
महक गई बगिया साधक की, उमगे गमले।
आश्चर्य है काम करें सरकारी अमले। ८

नव-निर्माण
ना रह जाना सिमट के, धन के पीछे यार।
यह तो बस शुरुआत है, आगे बडी कतार।
आगे बडी कतार, नए अभियान चलेंगे।

करना नव-निर्माण, लिए अभिमान
चलेंगे।
समय आ गया साधक, निज को ना
बिसराना।
धन के पीछे यार, सिमट के ना रह
जाना। ९

दूर रहे गन्दगी
फिर न आए गन्दगी, फिर ना
भ्रष्टाचार।
काँग्रेस फिर न आए, ना उभरे गद्दार।
ना उभरे गद्दार, शान्त घर में ही कर
दो।
रहो अहिंसक, बेहतर सबको हजम
ही कर लो।
धनपतियअॅ की व्यर्थ बन्दगी फिर न
आए।

स्वच्छ स्वस्थ साधक, गन्दगी फिर ना आए। १०

दशम प्रकरण
यथायोग्य सम्मान
यथायोग्य ही हो सदा, साधन का सम्मान।
साध्य सामने नित रहे, चरैवेति अविराम।
चरैवेति अविराम, स्वांस अन्तिम जब तक है।
देश की खातिर पुनः देह-धारण निश्चित है।
साधक साफा सिर पर, जूता पैर में सोहता।
साधन का सम्मान यथायोग्य ही होता। १

स्वभाव पहचानें
धन का पूर्वज कर्म है, कर्म से पहले भाव।
करो आचरण धर्म का, पहचानो स्व-भाव।
पहचानो स्व-भाव, भाव में भगवन बसते।
मौलिक प्रश्नअॅ के उत्तर संग में ही रहते।
साधक ने सीधा ही छेडा गहन मर्म है।
कर्म से पहले भाव, धन से पहले कर्म है।२

ऊँचा लक्ष्य
कठिन कर्ममय साधना, देश के हित हो तन्त्र।

सपने सार्थक हअॅ सभी, अब जीवन
का मन्त्र।
अब जीवन का मन्त्र, लक्ष्य ऊँचे ही
ऊँचे।
पद-यश-धन को छोड, बनो बच्चे से
सच्चे।
चारअॅ ही पुरुषार्थ प्राप्त, साधक हो
धर्ममय।
परम अर्थ हित तन्त्र, साधना कठिन
कर्ममय। ३

अपना हो तन्त्र
अपनी धरती अम्बर अपना, अपना ही
हो यन्त्र।
अपनापन मिलता जहाँ, वो ही है
जन-तंत्र।

वो ही है जन-तन्त्र, जहाँ जन-गण-मन
हर्षित।
वाद वही संवाद बने नित
अर्थ-विमर्षित।
साधक युगअँ-युगअँ से रहती आई
परती।
फलित हो मोदी-मन्त्र, तृप्त हो अपनी
धरती। ४

तीन-तेरह
तीन- से तेरह हो गए मित्र-विरोधी
मेल।
अफ़रातफ़री साफ़ है, राजनीति का
खेल।
राजनीति का खेल, बदलता ढंग
सुहाना।

संसद-प्रेस या जनता का अब बदला
बाना।
साधक कौन, कौन दुश्मन; सब
गडमड हो गए।
दल-बन्दी के दाँव, तीन से तेरह हो
गए। ५

डूबता मन
नुक्ता-चीनी हो गई, मूल बात है गौण।
मुद्रा-बदली खेल का, सूक्ष्म हो गया
कोण।
सूक्ष्म हुआ है कोण, मजे लेता
जन-गण-मन।
माया-ममता-काँग्रेस का, डूब रहा
मन।
साधक जिनकी छवि 'पाक' थी 'चीनी'
हो गई।

गली-गली में इनकी नुक्ता-चीनी हो गई। ६

मोदी की पकड़
मक्खन लिपटा हअॅठ पर, मुँह से निकसे नांह।
मोदी पकड़े हाथ जब, छुड़ा रहे हैं बाँह।
छुड़ा रहे हैं बाँह, दौड़ते नटखट बन के।
चुनाव आते हैं, छूटेंगे छक्के इनके।
साधक बात-बात में चेहरा बने अटपटा।
मुँह से निकसे नांह, ओंठ पर मक्खन लिपटा।७

प्रचण्ड आशाएं

जन-गण-मन उत्सव करे, गांव-गली में
धूम।
'मोदी-मोदी' देख लो, पूरे देश में घूम।
पूरे देश में धूम, बची ना कोई निराशा।
आगे ही आयेगा भारत, प्रचण्ड
आशा।
देश-भक्ति की धुन पर नाचे मन
जन-गण का।
मुखर हो गया साधक, गाना
जन-गण-मन का। ८

भागा राहिल
शहीद सातअॅ हो गए, पर भारत ना
दीन।
वे जीरो पर आऊट थे, हमने मारे
तीन।

हमने मारे तीन, दाँव भी अब अपना है।
बाजवा की बज जाए, जन-मन का सपना है।
साधक राहिल जान बचाकर विदा हो गए।
सीमा की रक्षा हित शहीद सातअॅ हो गए। ९

मोदी से भयभीत
मोदी से भयभीत सब, देश के दुश्मन एक।
चीन-पाक-भ्रष्टाचारी, बाहर-भीतर देख।
भीतर-बाहर देख, नजारा मजेदार है।
संकट में मुस्काता बन्दा शानदार है।
साधक जिसने पंगा लिया है इस मोदी से।

दुश्मन देश के घबराते हैं इक मोदी से।१०

शीघ्र प्रकाश्य साहित्य

- ✔ पश्मीना शाल से साफ़ी (उपन्यास)
- ✔ संथारा और इच्छा मृत्यु : एक विश्लेषण
- ✔ औसान (उपन्यास)
- ✔ कहानी संग्रह
- ✔ नाटक संग्रह
- ✔ शतक सीरिज
- ✔ विश्व-विषाद योग भाग
- ✔ टूटता भारत
- ✔ परिवार-सप्तक
- ✔ रामचरितमानस और वेद
- ✔ पर्यावरण शतक
- ✔ साँप
- ✔ साधक के पत्र
- ✔ संस्मरण शतक
- ✔ श्राद्ध

✔ सिनेमा पहेली

✔ टिप्पणी-शतक
✔ परम्परा-आराधक
✔ वर्तमान साँख्य-योग
✔ दर्शन-विवेचना
✔ मुक्तक शतक
✔ कथात्मक सहज काव्य शैली
✔ गणेशजी की सूंड
✔ लोक-मान्यताओं का रोचक गेय चित्रण
✔ अपनी नन्हीं कन्या के नाम लिखे कुछ चयनित पत्र
✔ पौराणिक बिम्बअॅ का वर्तमान सन्दर्भ
✔ काला धन

✔ समझ ले जीवन सार